जय भारत

जय हिंद

एक राष्ट्र एक नाम : भारत

मन के उन्मेष

अपना देश भारत सदैव अपनी अक्षुण्ण व विलक्षण संस्कृति से समृद्ध रहा है और रहेगा। ''भारत'' बोलने भर से जो गर्व की अनुभूति होती है वह अन्य नाम से शायद नहीं। इसी संकल्प को लेकर ''जनता की आवाज फाउण्डेशन'' द्वारा एक सघन अभियान चलाया जा रहा है। एक आवाज जो ''भारत को भारत ही बोला जाये'' विशाल रूप से जन–जन की आवाज बनकर संकल्प पत्र रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि हमारा देश ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' बनें जिसकी संकल्पना आज प्रत्येक भारतवासी के कंठ की पुकार है। ''एक राष्ट्र एक नाम : भारत'' पर भारत सरकार भी अपनी मोहर लगा दे तो अति उत्तम होगा। ये सर्व व्यापी जन–जन का अभियान पूरे भारत में अपनी पहचान बना रहा है जिसका शंखनाद इस पुस्तिका के माध्यम से किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भारत माँ के प्रति हमारी ये श्रद्धा सार्थकता बन भारत का नाम ''भारत'' पूरे विश्व में गुंजायमान होगा।

मुझे गर्व व गौरव है कि भारत के प्रति ये सत्कार्य मील का पत्थर साबित होगा। इस प्रतिवेदन के माध्यम से हम भारत को भारत कह कर नया अध्याय जोड़ना चाहते हैं। इसमें हमने भारतीय संस्कृति उसकी महत्ता, भारत की उत्पति, आवश्यकता जैसे कुछ प्रसंगो ं को खोजने की कोशिश की है।

जय भारत

❀❀❀❀

सुन्दर लाल बोथरा

jk"Vh¸k v/;{k

turk dh vkokt Qkm.Ms'ku

एक राष्ट्र, एक नाम : भारत

'जनता की आवाज फाउण्डेशन' राष्ट्रव्यापी अभियान चलाकर जन–जन की आवाज को जोड़ते हुए यह प्रतिवेदन प्रस्तुत करते है।

भूमिका – भारत को भारत ही बोला जाये–ONE NATION, ONE NAME अर्थात् एक राष्ट्र, एक नाम : भारत। यह एक बड़ा मिशन जनता द्वारा चलाया जा रहा है, जहां यह आकांक्षा की गई है कि देश के संविधान से 'इण्डिया' शब्द का विलोप होकर सिर्फ 'भारत' ही रहे। कारण यह है कि एक देश के कई नाम होने से भ्रम हो जाता है और नाम की महत्ता समाप्तप्राय हो जाती है। जबकि एक नाम होने से वैश्विक पटल पर गौरवमयी अनुभूति होती है जो कि भारत को भारत बोलने से ही आती है।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि किसी देश का नाम उसके अतीत की पृष्ठभूमि पर ही नामांकित किया जाता है, जो उसकी संस्कृति, इतिहास, गौरवशाली परंपरा को प्रतिलक्षित करता है। भारत नाम प्राचीन काल से ही समग्र रूप से भारत के नाम से प्रचलित होकर संविधान लागू होने तक देश के प्रत्येक नागरिक के हृदय में बसा हुआ है। जबकि संविधान भारत का भारत के नागरिकों के लिये बनाया जा रहा था तो उसे भारत की प्रमुख राजभाषा हिन्दी में मूलरूप से बनाया जाना था, जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 में स्वयं विधान निर्मात्री सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया है।

देश के एक नाम की आवश्यकता – अनेक पुराणों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के यशस्वी पुत्र 'भरत' अथवा शकुंतला के पुत्र भरत के नाम से प्रचलित होकर संविधान लागू होने तक देश के नागरिकों के हृदय में बसा हुआ है। भारत नाम की अकाट्य प्रमाणिकता ऋग्वेद काल के चक्रवती सम्राट भरत के नाम से मिलती हैं। इसके अलावा इसका उल्लेख भगवत पुराण, वैदिक ऋग्वेद, बौद्ध और जैन पुराणों एवं ग्रंथों महाभारत आदि में मिलता है। जबकि इण्डिया नाम की उत्पत्ति सिंधु

नदी के अंग्रेजी नाम 'इण्डस' से हुई। अंग्रेजों ने इसीलिये भारत को अंग्रेजी में इण्डिया कहा। यह 16वीं सदी की घटना है। जब अंग्रेज भारत को लूटने के इरादे से आये। भारत में नाम के आधार पर व्यक्ति की जाति, धर्म, उसका प्रदेश और खानपान के बारे में आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है। भारत नाम संज्ञा है, इसका कोई अनुवाद नहीं हो सकता। इण्डिया नाम की न तो कोई सभ्यता है और न ही कोई गौरवशाली परंपरा । संविधान की उद्देशिका में 'हम लोगों' का उल्लेख है, वे भारतीय है, सिर्फ भारतीय न कि कोई इण्डियन।

भारत की पृष्ठभूमि :

हमारे देश की सभ्यता–संस्कृति उतनी ही पुरानी है, जितना सृष्टि का उद्‌गम और विकास। हमारे देश का नाम पुराणों में उस भूमि को कहा गया है जो 'भारत वर्षम्' है, अर्थात् तब भारत में वह देश भी थे, जो आज पड़ौसी देश कहलाते हैं। जैसे–पाकिस्तान, अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजाकिस्तान, नेपाल, बांगलादेश, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार आदि। भारत संस्कृत नाम है, जो कि अग्नि का प्रतीक है। संस्कृत के बीज शब्द 'भा' से बना भारत का अर्थ निकलता है–जो ज्ञान की खोज में सतत् लीन है।

भारत अपने आप में विलक्षण है। 'भा' का अर्थ 'प्रकाश' और 'रत' का अर्थ 'संलग्न' है अर्थात् जो प्रकाश की दिशा में संलग्न है–वह है भारत। भारत ही अगर अंधेरे में खो जाये तो फिर मनुष्य, उसके जीवन और उस देश की सभ्यता–संस्कृति का कोई भविष्य नहीं हो सकता। वस्तुतः भारत का भाग्य संपूर्ण मनुष्यता का भाग्य है, भविष्य है, उसकी नियति है, उसका प्रारब्ध है।

भारत सत्य को पा लेने का दूसरा नाम है। भारत में पैदा भर हो जाने से ही हम भारतीय हो जायें, ऐसा नहीं होता। अपने अंदर के प्रकाश को खोजने का नाम ही भारत है। भले ही भारत में जन्म लिया हो और भाग रहे हैं धन के पीछे, भौतिक सुख–सुविधाओं के पीछे तो हम भारतीय, भारतीय होकर भी पश्चिमजन ही माने जायेंगे। किंतु पश्चिम में जन्म लेकर भी किसी महामानव ने अपने भीतर के प्रकाश को खोज लिया तो

वह भारतीय है। इस अर्थ में सुकरात, प्लेटो, जीसस, लाओत्से सब भारतीय ही माने जायेंगे। यूं भारत का नाम भारत ही है जिसने अपना सब कुछ त्याग दिया था, इसीलिये सिर्फ भारतीय उपनिषद् ने ही उद्घोष किया – 'हे अमृतत्सय पुत्रः – हे अमृत के पुत्र!'

यह भाषा और भाव भी सिर्फ मानव भर का सौभाग्य नहीं है, 'अथर्ववेद' के 'पृथ्वीसूक्त' में यह भूमि हमारी मां है और हम इसके पुत्र। हम 'वसुधैव कुटुंबकम्' की सिर्फ बात नहीं करते, हमने उसे जीया भी है और जीते रहेंगे। क्योंकि हमारी महायात्रा स्वयं के भीतर के खोज की है और आत्ममंथन की है। देखा जाये तो दुनिया को कुछ ही दार्शनिकों और उनके दर्शन ने प्रभावित किया है–सिग्मंड फ्रायड, कार्ल मार्क्स और ज्यां पाल सात्र उनमें से प्रमुख है।

सिग्मंड फ्रायड ने कहा है कि –' जो कुछ है, उसके मूल में सेक्स है।' मार्क्स ने कहा कि जीवन का आधार रोटी और वर्ग संघर्ष है। वही सात्र ने कहा – 'अस्तित्ववाद।' परंतु भारतीय ज्योतिष विज्ञान इस सबसे आगे बढ़कर कहता है कि–'यद ब्रहमाण्डे तत् पिंडे!' अर्थात् जो कुछ भी इस ब्रह्माण्ड में है, वही इस पिण्ड में है। भारतीय आत्मदर्शन के इस भीतर की खोज ने हमें वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत, महावीर, बुद्ध, कबीर, नानक आदि दिये।

समय–समय पर देश के नाम के बाबत विवाद उठता रहा। सन् 2005 में रिटायर्ड आईएएस वी. सुंदरम ने एक लेख लिखा कि देश का नाम केवल 'भारत' ही होना चाहिये। सन् 2012 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य शांताराम नाईक ने प्राइवेट बिल प्रस्तुत किया, उनका कहना था कि 'इण्डिया' केवल एक क्षेत्र का नाम मात्र है, जबकि 'भारत' शब्द से देश की गौरवशाली परंपरा झलकती है। हम 'भारतमाता की जय' बोलते हैं। इण्डियामाता की जय नहीं बोलते। अभी कुछ समय पूर्व एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में प्रस्तुत की गई, जिसमें इण्डिया के स्थान पर देश का नाम भारत रखने की प्रार्थना की गई थी, जिसे संबंधित मंत्रालयों की ओर अग्रेसित कर दिया गया।

एक प्रतिवेदन माननीय सर्वोच्च न्यायालय में दिल्ली निवासी 'नमह' की ओर से प्रस्तुत किया गया था, जिसका विषय देश के संविधान में इण्डिया शब्द का विलोप कर सिर्फ भारत करना था। भारत की आजादी की 75वीं सालगिरह पर हम सभी भारतीयों की भी यही कामना है कि देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही हो। ONE NATION-ONE NAME अर्थात् एक राष्ट्र, एक नाम यानि भारत।

माननीय न्यायालय के समक्ष याचिका क्र : WP(CIVIL) No. 422/2020 में यह निराकरण चाहा गया कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 के अंतर्गत संविधान में संसोधन कर इण्डिया शब्द को हटाकर सिर्फ 'भारत' रखा जाये।

याचिका की सुनवाई 3 सदस्यों की खण्डपीठ जिसमें न्यायमूर्ति मुख्य न्यायाधिक बोबडे, न्यायमूर्ति ए.एस. बोपन्ना और न्यायमूर्ति ऋषिकेश राय की खण्डपीठ के समक्ष हुई। 3 जून 2020 के अपने आदेश में न्यायालय में इस प्रार्थी अधिवक्ता की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए याचिका को प्रतिवेदन मानकर भारत सरकार से संबंधित मंत्रालय से उचित कार्यवाही हेतु भेज दी।

माननीय खण्डपीठ ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। तदानुसार आपकी सेवा में और भारत सरकार संबंधित मंत्रालय, गृह मंत्रालय, गृह विधायी विभाग कानून और न्याय मंत्रालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, कानूनी मामला विभाग की ओर से सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के प्रकाश में प्रेषित हैं।

आप महानुभाव की सेवा में – 'इण्डिया अर्थात् भारत राज्यों का संघ होगा' के स्थान पर सिर्फ 'भारत राज्यों का संघ' होगा। यह संविधान में संसोधन चाहते हैं। इसके लिये संविधान में संसोधन के लिये अतीत की पृष्ठभूमि संस्कृति, इतिहास, देश की गौरवशाली परंपरा के आधार पर निम्नानुसार तथ्यात्मक प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. गांधी जी ने अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई में 'भारत माता की जय' का नारा दिया था, न कि इण्डिया माता का।

2. देश का राष्ट्रगान में नाम 'भारत' है, न कि 'इण्डिया'।
3. भारतीय दण्ड संहिता अंग्रेजों ने बनाई थी तथा उसका अंग्रेजी नाम 'Indian Penal Code भारतीय दण्ड संहिता 1860' रखा गया था और हिन्दी अनुवाद में 'भारत' शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि देश का नाम प्राचीनकाल से भारत अथवा भारतवर्ष रहा है।
4. अंग्रेजों के शासन से पूर्व मुगलों के समय देश का नाम भारत था, मुगलों ने इसे 'हिन्दुस्तान' नाम से भी पुकारा।

याचिका कर्ता ने संविधान सभा की कार्यवाही का भी उल्लेख किया है कि संविधान में India नाम का बहुत विरोध हुआ था और समय–समय पर भारत की जनता इसका नाम बदलने की आवाज उठाती रही है।

भारत से हिन्दुस्तान और इण्डिया का संक्षिप्त परिचय :–
अंग्रेज, भारत में व्यापारी के रूप में आये थे। लंदन के कुछ व्यापारियों की ईस्ट इण्डिया कंपनी को सन् 1600 में इंग्लैण्ड की महारानी ने चार्टर प्रदान किया था, जिसके तहत कंपनी को भारत में तथा दक्षिण एशिया में 15 सालों तक व्यापार का एकाधिकार प्रदान किया गया। उस समय देश का नाम भारत था।

हमारे देश का वास्तविक नाम भारत है, यह नाम भरत प्रथम चक्रवर्ती राजा थे, उनके नाम पर रखा गया। इस प्रकार जैनों को देश का नाम भारत दिये जाने का श्रेय प्राप्त है। वस्तुतः भारत में सभ्यता का प्रारंभ भरत चक्रवती के समय से ही माना जाता है।

जब विश्व में सभ्यता का प्रारंभ हुआ, उस समय देश का नाम भारत ही था। इसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। भारत के भूगोल का इतिहास इंगित करता है कि यह भूमि सात नदियों की थी। ऋग्वेद की सातवीं पुस्तक के 18वें श्लोक में 10 राजाओं के युद्ध तथा उस समय के 10 बलशाली कबीलों का वर्णन किया गया है। इन कबीलों का नेतृत्व सम्राट सुदास ने किया जिसका संबंध तिर्तश् कलेदंजल से था। यह युद्ध रावी नदी के तट पर हुआ जो वर्तमान पंजाब में बहती है। सम्राट सुदास को इस युद्ध में भव्य सफलता मिली जिसके परिणामस्वरूप भारत कबीले का

नाम लोगों की जुबान पर आ गया और इस भूमि को भारतवर्ष नाम प्रदान किया गया। जिसका अर्थ होता है–भारत की भूमि।

महाभारत में भारत नाम का उल्लेख इस रूप में मिलता है कि देश 'भारतवर्ष' के नाम से जाना जाता था, यह नाम भरत चक्रवती के नाम पर रखा गया। भरत, भरत कलेदंजल के जन्मदाता थे। इस वंश परंपरा से ही पाण्डव और कौरव थे। भरत ने कई राज्यों को जीतकर सबका विलय कर एक संघ का निर्माण किया, जिससे भारतदेश का निर्माण हुआ। विष्णु पुराण में भी इस भूमि को भारतवर्ष के नाम से ही संबोधित किया गया है। जबसे राजा ऋषभदेव ने इसे अपने पुत्र भरत को दिया था और वे स्वयं राज्य को त्याग कर मुनि हो गये थे। विष्णु पुराण में इससे संबंधित श्लोक इस प्रकार है–

'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।'

इस श्लोक का अर्थ है कि समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण मे जो देश है उसे भारत कहते है तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते है।

यह आश्चर्यजनक है कि भारतवर्ष के अंग रहे देश आज अपने स्वतंत्र नामों से जाने जाते है, जैसे कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार तथा श्रीलंका, जबकि भारत को ही उसके स्वतंत्र नाम की बजाय विश्व में इण्डिया के नाम से संबोधित किया जाता है।

सभ्यता के आरंभ से अब तक देश – विदेशों में हमारे देश को निम्नलिखित नामों से जाना जाता रहा है–

1. भारत
2. जंबूद्वीप
3. आर्यावर्त
4. नाभिवर्षा
5. तियान्जुह

6. हिन्द / हिन्दुस्तान
7. इण्डिया
8. मेलुहा
9. होडू
10. अजनाभवर्ष

भारत के पूर्व नाम :

1. भारत – भारत शब्द की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। भारत का उल्लेख हिन्दु पुराणों तथा महाभारत में हुआ है। ऋग्वेद में भारत में रहने वाली जाति को भारती कहा गया है। यह देश उस समय छोटे–छोटे भागों में बंटा हुआ था, परंतु समग्रता व एकता में यह भारत ही था। 'भरतनाट्यम' नृत्य से भी भारत शब्द को जोड़कर देखा जाता है। 'भा' का अर्थ है 'भावम्' तथा 'रा' से तात्पर्य 'रागम्' है तथा 'ता' को 'तालम्' से अर्थात् सुर साधना से जोड़ा गया है। यह सब मिलकर भारत की गौरवशाली सभ्यता, एकता और अखण्डता को दर्शाता है।

   पं. नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में लिखा है कि – 'बहुधा मैं भारत के लोगों से मिला और उनसे कहा कि जिसे हम भारतवर्ष मानते हैं, भारत कहते हैं, वह संस्कृत शब्द से निर्मित है।'

2. जंबूद्वीप–प्राचीन शास्त्र में भारत का नाम जंबूद्वीप है। दक्षिण–पुर्वी एशिया के देशों के इतिहास में भारत को जंबूद्वीप कहा गया है। भारत का यह नाम थाईलैण्ड, मलेशिया, जावा, बाली के देशों के इतिहास में मिलता है। इस द्वीप पर जंबू वृक्ष बहुतायात में थे, अतः इस द्वीप को अथवा इस देश को जंबू द्वीप के नाम से संबोधित किया गया।

3. आर्यावर्त – वैदिक साहित्य में जैसे मनुस्मृति में इस पुण्य सलिला भूमि को आर्यावर्त कहा गया है। उत्तरी भाग को विशेष तौर पर आर्यावर्त कहा गया है।

4. नाभिवर्षा–जब भारत को भारतवर्ष कहा जाता था, इससे पूर्व इसे नाभिवर्षा के नाम से भी जाना जाता था। राजा नाभि ऋषभदेव के पिता थे तथा सूर्यवंशी राजा थे।

5. तियान्जूह– यह शब्द भारत के लिये जापान तथा चीन में प्रचलित था। जापान में इस शब्द का आशय है–'स्वर्ग की धरती'।

6. हिन्द या हिन्दुस्तान – इस नाम को राजनीति से जोड़ा जा सकता है। क्योंकि देश को यह नाम दिया गया था, या कहे कि थोपा गया था। अंग्रेजों तथा पर्शियन ने अपनी सुविधानुसार यह दो नामकरण किये। यह घटनायें सातवीं से बीसवीं सदी के मध्य की हैं। हिन्द वस्तुतः सिंधु शब्द की विकृति है। सिंधु क्षेत्र के संपर्क के कारण पर्शियन्स ने इसे हिन्द अथवा हिन्दुस्तान नाम से संबोधित किया।

   मुगलों ने भी अपने शासनकाल में इसे पर्शियन शब्द 'हिन्दुस्तान' के नाम से ही संबोधित किया। जबकि भारतीय जनता अपने देश को सदैव भारत ही कहती रही है। 16वीं सदी में दक्षिणी एशिया में हिन्दुस्तान शब्द लोकप्रियता पा चुका था। वास्तव में यह नाम मुगलों के शासनाधिकार के क्षेत्र में आने वाले देश को दर्शाता था। 18वीं सदी में अंग्रेजों ने अपनी सुविधानुसार इसे अपने नक्शों में 'इण्डिया' के नाम से ही संबोधित किया। अंग्रेज व्यापारी एवं मौकापरस्त जाति थी, अतः उन्हें सिवाय धन के यहां के लोगों की भावनाओं और इतिहास से कोई वास्ता नहीं था। जब अंग्रेज इस देश पर पूर्ण रूप से प्रभावी शासन करने लगे तब दक्षिण एशिया में भी हिन्दुस्तान नाम की जगह देश का नाम इण्डिया प्रचलित हो गया।

7. इण्डिया – संविधान के अनुच्छेद 1 के समय चर्चा में यह बात सामने आई कि 'इण्डिया' शब्द के मूल में सिंधु शब्द जो एक नदी का नाम है, छिपा हुआ है। प्राचीन पर्शिया तथा अरबी अक्षर 'स' को 'ह' कहा जाता है। ईसा से पूर्व तीसरी सदी में पर्शियन तथा अरबों का भारत से संपर्क हुआ और उन्होंने सिंधु नदी के आधार पर इस देश को

हिंदु अथवा हिदुंस्तान के नाम से संबोधित किया। ग्रीक तक यह शब्द पहुंचते–पहुंचते और भी विकृत होकर 'इण्डस' हो गया, जहां से यह पूरे यूरोप में फैलते हुए 'इण्डिया' हो गया।

यहां यह लिखना समीचीन होगा कि पाश्चात्य देशों ने जब इस देश का नाम 'इण्डिया' रखा, तब भी इस देश का नाम 'भारत' ही सर्वाधिक रूप से लोकप्रिय था। संविधान के लिये इस देश को इण्डिया नाम दिया गया जिसका अनुवाद भारत होता है। यह संभवतः विश्व का एकमात्र उदाहरण है जहां देश के नाम का भी अनुवाद प्रस्तुत है। जबकि इण्डिया शब्द न तो भारतीय संस्कृति और न ही यहां की गौरवमयी ऐतिहासिक परंपराओं को दर्शाता है और न ही महान् अतीत का परिचायक है।

8. मेलुहा – मेसोपोटामिया में भारत को इस शब्द से जाना जाता है और इण्डस वेली की सभ्यता से जोड़ा जाता है।

9. होडू–ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ 'ओल्ड टेस्टमेंट' में भारत को 'होडू' के नाम से संबोधित किया गया है। एरिजोना, यूएएस में भारत शब्द की उत्पत्ति हिब्रू शब्द 'बेरेथ' से हुई है, जिसका अर्थ है शालीनता से परिपूर्ण'।

10. अजनाभवर्ष – प्रसिद्ध पुराण भागवत के अनुसार सृष्टि के आरंभ में मनु नाम के राजा थे। उसके पौत्र का नाम नाभिराय था। नाभिराय के पुत्र ऋषभदेव थे, जो जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे। उस काल को भारत में अजनाभवर्ष के नाम से जाना जाता है।

ज्ञात रहे कि स्वतंत्रता उपरांत भारत का संविधान बनाने हेतु संविधान निर्मात्री कमेटी का डॉ. अंबेडकर के सभापतित्व में गठन दिनांक 29 अगस्त 1947 को किया गया। जब संविधान के अनुच्छेद 1 का वाचन 18 सितबंर 1949 को आरंभ हुआ तो प्रतिनिधियों में स्पष्ट विभाजन देखा गया। हरिविष्णु कामथ, जो फारवर्ड ब्लॉक के सदस्य थे, उन्होंने कहा कि प्रथम अनुच्छेद का 'भारत या अंग्रेजी की शब्दावली में इण्डिया' की शब्दावली से माना जाये। सेठ गोविंद दास ने जो सेंट्रल प्रोविन्स व बरार

के प्रतिनिधि थे, उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 1 को पुनः लिखा जाये, क्योंकि 'भारत' शब्द को इण्डिया विदेशों में कहा जाता है। हरगोविंद पंत ने जो उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र से थे, कहा कि हम यह चाहते हैं कि अनुच्छेद 1 में केवल देश के लिये 'भारत' लिखा जाये, जो कि सदियों से मूल भारतीय जनता में प्रचलित है। पंत जी ने विधान निर्मात्री सभा से जो कहा, वह हमारी आंखें खोलने के लिये पर्याप्त है कि 'यह समझ से परे है कि अन्य सदस्यों का इण्डिया शब्द से क्या लगाव है! देश को 'इण्डिया' नाम विदेशियों की देन है।

भारत के तीन भरत – भारत का नामकरण भरत के नाम पर हुआ था। यहां यह विदित रहे कि भारत में आदि काल में तीन भरत हुए और तीनों ही प्रतापी सम्राट थे। एक ऋषभदेव के पुत्र भरत, दूसरे दशरथ के पुत्र भरत और तीसरे शकुंतला और दुष्यंत पुत्र भरत। वैदिक, बौद्ध तथा जैन पुराणों में ऋषभदेव के पुत्र भरत का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेदिक सभ्यता हजारों वर्ष पुरानी है। खारवेल की हाथी गुफा में भी उनका उल्लेख मिलता है। ये भरत आदिनायक मनु के वंशज थे। मत्स्य पुराण में उल्लेख किया गया है कि महायोगी भरत के नाम पर देश का नाम 'भारत' पड़ा।

दूसरे भरत भगवान श्रीराम के छोटे भाई थे। उस कालखण्ड में भी देश को भारत के नाम से संबोधित किया जाता था। अंतिम तीसरे भरत जो की दुष्यंत–शकुंतला के पुत्र थे कि गणना महाभारत में सोलह सर्वश्रेष्ठ राजाओं में की गई है। इस बात की पुष्टि महाकवि कालिदास की कालजयी रचना 'अभिज्ञान शकुंतलाम्' में भी की गई है। इस ग्रंथ में यह भी लिखा गया है कि भारत देश का नामकरण इन्हीं पराक्रमी भरत के नाम पर हुआ था।

महर्षि वेदव्यास ऋग्वेद काल का भौगोलिक वर्णन करते हुए लिखते है कि उस समय देश में कई वैदिक समूहों अथवा जातियों का निवास था। जिनमें गांधार, अनुद्रुहा, पुरू, तुरवंश और भारत आदि थी। गीता के भी कुछ श्लोकों में भारत शब्द का प्रयोग हुआ है। संस्कृत शब्द भारत के

संधि विग्रह करने पर भा से भावार्थ धर्म में और रत का अर्थ लीन होना होता है, इस प्रकार समग्र अर्थ निकलता है–धर्म में रत अर्थात् वह देश जो सदैव धर्म में रत रहता है।

नाभि के पुत्र ऋषभ उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती सम्राट थे। उनकी महिमा अलौकिक थी। वह प्राचीन काम में प्रथम चक्रवर्ती बन गया था और उसके पास १४ रत्न, ३२,००० राजा और लाखों चतुरंग सेनाएँ थी। इसका उल्लेख भागवत पुराण, हरिवंश पुराण, आदिपुराण, विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण आदि में मिलता है।

ऋषभ का पुत्र भरत बहुत प्राचीन है। स्वायंभुव मनु प्रियव्रत, अग्निग्रह, नाभि, ऋषभ और फिर भरत ऐसी मार्कंडेय पुराण में वंशावली है। तदनुसार भरत पाँचवाँ वंशज बन जाता है। एक अन्य परंपरा के अनुसार नाभि अंतिम मनु है और ऋषभेय भरत इक्ष्वाकु वंश का दूसरा वंशज है। दुष्यंत के पुत्र सर्वदमन भरत न केवल पहले मनु थे बल्कि पुरुवंश के कम से कम १६ वे वंशज थे उनके कबीले को भरतकुल नाम मिला और उनकी वंशावली भरत के नाम से प्रसिद्ध हुई। आदिपर्व (२/६६, ६७/२४, ६७/१२, ७४/३१, ६४/१६) में इसका उल्लेख है। सर्वदमन भारत चक्रवर्ती सम्राट थे लेकिन कई लोग उस परंपरा में सम्राट बन गए। नहुष, ययाति, जनमेजय सभी विजयी सम्राट थे।

ऋषभ के पुत्र भरत की विशेषता यह है कि वे पहले वंश के थे। प्राचीन जैन आगम ग्रंथों (ठाणग समवायगएजम्बुदिवपन्ति आदि प्रधान श्रुतिग्रन्थ) में हमारे देश के नाम और नामकरण के बारे में स्पष्ट उल्लेख हैं। सम्राट भरत की राजधानी विनीता (अयोध्या) थी। यह ग्रंथ इसकी सुंदरता यक्ष और अन्य राजाओं द्वारा दिए गए आतिथ्य का व्यापक विवरण देता है। उनके पराक्रम का वर्णन महापुराण हरिवंश पुराण में विस्तार से किया गया है।

विभिन्न पुराणों में ऋषभ के पुत्र भरत से भारतवर्ष ऐसे रुप में उल्लेख किया गया है। वे इस ग्रंथ के नीचे दिये हुए पृष्ठों पर है।

पृष्ठ क्र. पुराण नाम

१२६ ब्रम्हांडपुराण – पुर्वर्ध २, ए १४/५६–६१+
नारदपुराण पुर्व खंड अध्याय ४८/५–६

१२८ लिंगपुराण – ४७, १६–२४ भारतवर्ष

१२६ स्कंद पुराण – महेश्वर खंडस्थ – कुमारखंड ३७/५७

१३० शिव पुराण – अध्याय–३७

१३५ भागवत पुराण – ५/७/३ ऋषभदेव प्रथम जैन तीर्थंकर

१३८ सार्थ एकनाथी भागवत

आचार्य बलदेव उपाध्याय, सूरदास काव्य, डॉ. जायसवाल, डॉ. अवधरीलाल अवस्थी, डॉ. पी. सी. रॉयचौधरी, डॉ. मंगलदेव शास्त्री, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ. प्रेमसागर जैन, प्री. आर.डी. करमकर आदि ने ऋषभ के पुत्र भरत के कारण भारतवर्ष के रुप में स्वीकार किया है।

जैन तीर्थंकर ऋषभदेव – पुत्र भरत से भारत

डॉ. पी.सी. जैन ने अपने लेख 'भरत से भारत' में अनेक वैदिक परंपरा के ग्रंथों से उक्त मत का अनुमोदन कर इसमें किसी भी प्रकार की भ्रांति की जगह नहीं छोड़ी है।

वैदिक परंपरा के ग्रंथों से उद्धृत

अग्निपुराण :–

ऋषभो मरूदेव्यां च ऋषभाद् भरतोऽभवत्।
ऋषभो दत्तश्रीः पुत्रे शाल्यग्रामे हरिं गतः।
भरताद् भारतं वर्ष भरतात् सुमतिस्त्वभूत।।

नाभिराज मरुदेवी से ऋषभ का जन्म हुआ है। ऋषभ से भरत का जन्म हुआ। भरत से इस देश का नाम 'भारतवर्ष' हुआ। भरत के पुत्र का नाम सुमति था।

मार्कण्डेयपुराण :–

आग्नीध्रसूनोर्नाभेस्तु ऋषभेऽभूत् सुतो द्विजः।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताद् वरः।।
सोभिषिच्यर्षभः पुत्रं महाप्राव्राज्यमास्थितः।
तपस्तेपे महाभागः पुलहाश्रम संश्रयः।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्ष भरताय पिता ददौ।
तस्मात्तु भारतं वर्ष तस्य नाम्ना महात्मनः।

ऋषभदेव से भरत का जन्म हुआ जो अपने सौ भाइयों में अग्रज थे। भरत को राजपाट सौपने के बाद ऋषभदेव ने संन्यास ग्रहण कर लिया। भरत को हिमवत नामक प्रदेश शासन के लिये मिला एवं इसी कारण इस प्रदेश का नाम भारतवर्ष हुआ।

ब्रह्माण्डपुराण :–

नाभिस्त्वजनयत् पुत्रं मरूदेव्यां महाद्युतिम्।
ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।
सोऽभिषिच्यर्षभः पुत्रं महाप्रव्रज्या स्थित।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्ष भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात्तु भारतं वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बुधा।

नाभि के पुत्र ऋषभ हुए। वे 'पार्थिव श्रेष्ठ' तथा 'सब क्षत्रियों के पूर्वज' थे। उनके सौ पुत्रो मे भरत अग्रज थे। उनका राज्याभिषेक कर ऋषभदेव ने संन्यास ग्रहण कर लिया। भरत ने हिमवत नामक प्रदेश पर राज्य किया, जिसे बाद में भारतवर्ष नाम से संबोधित किया गया।

स्कन्दपुराण :–

नाभेः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभाद् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते।

नाभि से ऋषभ तथा उनसे भरत हुए जिनके नाम से यह देश भारतवर्ष कहा जाता है।

लिंगपुराण :–

नाभिस्त्वजनयत् पुत्रं मरुदेव्यां महामतिः।
ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्र–सुपूजितम्।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।
सोऽभिषिच्याथ ऋषभो भरतं पुत्रवत्सलः।।
ज्ञानवैराग्यमाश्रित्य जित्वेन्द्रिय–महोरगान्।
सर्वात्मनात्मनि स्थाप्य परमात्मानमीश्वरम्।।
नग्नोजटी निराहारोऽचीवरो ध्वान्तगतो हि सः।
निराशस्त्यक्तसंदेहः शैवमाम परं पदम्।।
हिमाद्रेर्दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।।

वायुपुराण :–

नाभिस्त्वजनयत्पुत्रं मरुदेव्या महाधुतिः।
ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।
सोऽभिषिच्याथ भरतं पुत्रं प्राव्राज्यमास्थितः।।
हिमाह्व दक्षिणं वर्ष भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।।

नाभि और मरूदेवी से महाद्युतिवान 'ऋषभ' नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। यह नृपतियों में उत्तम राजा थे। उनसे भरत नामक पुत्र हुआ। भरत को राजपाट सौंपने के बाद वे संन्यास लेकर वन में चले गये। भरत ने हिमवान् नामक प्रदेश पर राज किया जिसे कालान्तर में भारतवर्ष कहा जाने लगा।

नारदपुराण :–

आसीत् पुरा मुनिश्रेष्ठः भरतो नाम भूपतिः।
आर्षभो यस्य नाम्नेदं भारतं खण्डमुच्यते।।
स राजा प्राप्ताराज्यस्तु पितृपैतामहं क्रमात्।
पालयामास धर्मेण पितृवद्रंजयन् प्रजाः।।

पूर्वसमय में मुनियों में श्रेष्ठ भरत नाम के राजा थे। वे ऋषभदेव के पुत्र थे तथा कालान्तर में उनके नाम से ही प्रदेश का नामकरण भारतवर्ष हुआ। राजा भरत ने अपनी प्रजा का पुत्रभाव से पालन–पोषण किया।

श्रीमद्भागवत :–

येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुणा आसीत्।
येनेदं वर्ष भारतमिति व्यपदिशन्ति।

श्रेष्ठगुणों के आश्रयभूत महायोगी भरत अपने सौ भाइयों में सर्वोत्तम थे तथा उन्ही के नाम के आधार पर देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

शिवपुराण :–

नाभेः पुत्रश्च वृषभो वृषभात् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते।

नाभिपुत्र ऋषभ और ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर देश का नाम भारत हुआ।

सूरसागर :–

बहुरो रिषभ बड़े जब भये, नाभि राज दे वन को गये।
रिषभ राज–परजा सुख पायो, जस ताको सब जग में छायो।
रिषभदेव जब वन को गये, नवसुत नवौ–खण्ड–नृप भये।
भरत सो भरत–खण्ड को राव, करे सदा ही धर्म अरु न्याव।

भावगत :–

तेषां वै भरतो ज्येष्ठो नारायण–परायणः।
विख्यातं वर्षमेतद् यन्नाम्ना भारतमद्भुतम्।।

वराहपुराण :–

नाभिर्मरुदेव्यां पुत्रमजनयत् ऋषभनामानं तस्य भरतः
पुत्रश्च तावदग्रजः तस्य भरतस्य पिता ऋषभः
हेमार्द्रर्दक्षिणं वर्षं महद् भारतं नाम शशास।

कूर्मपुराण :–

हिमाह्वयं तु यद्वर्षं नाभेरासीन्महात्मनः।
तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मरुदेव्या महाद्युतिः।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रः शताग्रजः।
सोऽभिषिच्यर्षभः पुत्रं भरतं पृथिवीपतिः।।

विष्णुपुराण :–

न ते स्वस्ति युगावस्थ क्षेत्रेष्वष्टसु सर्वदा।
हिमाह्वयं तु वै वर्षं नाभेरासीन्महात्मनः।।
तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मरुदेव्यां महाद्युतिः।
ऋषभाद्भरतो जज्ञे ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः।।

इसके अलावा 'भागवत पुराण', 'वराहपुराण', 'कूर्मपुराण' तथा 'विष्णुपुराण' में भी भरत के नाम पर देश का नामकरण भारत होने की पुष्टि की गई है।

जैन परंपरा के ग्रंथों से उद्घृत

वसुदेवहिण्डी :–

इहं सुरासुरिंदविंदवंदिय–चलणारविंदो उसभो नाम पढ़मो राया जगप्पियामहो आसी। तस्य पुत्तसयं। दुवे पहाणा भरहो बाहुबली य। उसभसिरी पुत्तसयस्स पुरसयं च दाऊण पब्बइयो। तत्थ भरहो। भरहवासचूड़ामणि, तस्सेव णामेण इहं भारतवासं ति पवुच्चंति।

अर्थात् यहां जगत्पिता ऋषभेदव प्रथम राजा हुए। सुर और असुर दोनों ही इन्द्र के चरणकमलों की पूजा करते थे। उनके सौ पुत्र हुए। दो पुत्र भरत और बाहुबली मुख्य थे। उन्होंने बड़े पुत्र भरत को राजपाट सौंप दिया। बाद में इन्ही भरत के नाम से प्रदेश का नाम भारतवर्ष हुआ।

जम्बूदीवपण्णति :–

भरहे अइत्थदेवे णाहिड्ढिए महज्जुए जावपलि ओवमढिइए परिवसइ। से एएणट्ठेणं गोयमा, एवं वुच्चइ भरहेवासं।

इस क्षेत्र में एक महर्द्धिक पाल्योपम स्थितिवाले भरत नाम के देव का वास है। उनके नाम से इस क्षेत्र का नाम 'भारतवर्ष' प्रसिद्ध है।

महापुराण :–

ततोऽभिषिच्य साम्राज्ये भरतं सूनुमग्रिमम्।
भगवान भारतं वर्षं तत्सनाथं व्यधादिदम्।

इसके पश्चात् भगवान ऋषभदेव ने अपने बड़े पुत्र भरत का राज्याभिषेक किया तथा भरत से शासित प्रदेश भारतवर्ष हो, ऐसी घोषणा की गई।

'भारतवर्ष' को उन्होंने सनाथ किया :–

प्रमोदभरतः प्रेमनिर्भरा बन्धुता तदा।
तमाह्वत भरतं भावि समस्त भरताधिपम्।।
तन्नाम्ना भारतं वर्षमितिहासीज्जनास्पदम्।
हिमाद्रेरासमुद्राच्च क्षेत्रं चक्रभृतामिद्।

समस्त भरत क्षेत्र के उस भावी अधिपति को आनंद की अतिशयता से स्नेह करने वाले बंधुसमूह ने भरत कह कर संबोधित किया। उस भरत के नाम से हिमालय से समुद्र पर्यन्त यह चक्रवर्तियों का क्षेत्र 'भारतवर्ष' के नाम से हिमालय से दक्षिण तक प्रचारित हो गया।

पुरुदेवचम्पू :–

तन्नाम्ना भारतं वर्षमितिहासीज्जनास्पदम्।
हिमाद्रेरासमुद्राच्च क्षेत्रं चक्रभृतामिद्।

अर्थात् उसके नाम से यानि भरत के नाम से यह देश भारतवर्ष के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हिमवान् कुलाचल से लेकर लवणसमुद्र तक का यह क्षेत्र 'चक्रवर्तियों का क्षेत्र' कहलाता है।

प्राचीन काल में जैन संस्कृति के उत्कर्ष के समय इस देव भूमि को जंबू द्वीप के नाम से भी संबोधित किया गया था। आर्य सभ्यता के समय इस पावन भूमि को आर्यावर्त नाम मिला। वर्तमान इतिहासकारों और विद्वानों ने जैन सम्राट भरत के नाम पर देश का नाम भारत होना स्वीकारा है। जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक का शीर्षक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' का हिन्दी अनुवाद भारत की खोज' ही रखा गया। विदेशियों ने हिन्दू नाम दिया। प्रारंभिक संस्कृति जैनों की श्रमण संस्कृति थी। क्योंकि आंध्रप्रदेश के दक्षिणी छोटे भाग को अर्व कहा जाता था। अतः वह भी तमिलनाडू राज्य में ही रहा। अतः विदेशी जो सिंधु नदी पर सुदूर से आये थे, को भारत माना, जो तब भी भारत था और आज भी भारत है।

जहां तक भारत नाम का प्रश्न है, इतिहास से पूर्व भी यह भारत ही माना जाता रहा है। आज भी भारत के निवासी भारतीय कहलाते हैं। यद्यपि देश का कोई धर्म नहीं होता है। किंतु धर्म की स्वतंत्रता का मूल अधिकार संविधान में सबको है। देश के नागरिक केन्द्र सरकार से प्रार्थना करते हैं कि संविधान के अनुच्छेद 1 के उप अनु. 1 में जिस इण्डिया शब्द का उल्लेख है, उसे अस्पष्ट तथा अर्थहीन मानकर निकाल दिया जाये और देश का नाम भारत या भारत संघ रखा जाये।

सारांश :

स्पष्ट है कि हिन्दी देश की राजभाषा थी, देश के अधिकांश नागरिकों की भाषा भी हिन्दी थी, इसीलिये संविधान निर्मात्री सभा को भारत का संविधान भी हिन्दी में ही बनाना था, इस तरह भारत और इण्डिया की परिभाषा में स्पष्टता नहीं होने से उपरोक्त कथनों के अनुसार संविधान में संसोधन आवश्यक है। संविधान में जो नाम संघ और उसके राज्य क्षेत्र का है, वह केवल भारत हो। भारत के गौरवशाली अतीत और भारतीय संस्कृति की गरिमामयी परंपरा तथा समस्त भारतीयों की भावना अक्षुण्ण

रखते हुए संविधान में उपरोक्त संसोधन हेतु भारत सरकार उचित कदम उठा कर देश के लोगों को न्याय दिलवाये। भारतीय गणतंत्र की अखण्डता, एकता और समरसता के हेतु तथा भारत मां के सम्मान हेतु माँ भारती के प्रति ऐतिहासिक पूजा, आराधना व अर्चना होगी। हम भारत के लोग सरकार के प्रति सदैव आभारी रहेंगे।

जय भारत!

अस्तु! 'किसको नहीं पता हमारा भी अतुल उत्थान था।
सृष्टि का विकास व्योम में चढ़ता मार्तण्ड था।
अवनत किया अनार्यो ने, संस्कृति को मिटाया,
भरतखण्ड की शक्ति को न जाने कितनी बार मिटाया।
है वृद्ध पुरातन देश इसकी गाथा हम सुनायेंगे,
हाँ, हां, हम भारत को भारत ही बोलेंगे।

संकलन : डॉ. कृष्णा आचार्य – बीकानेर

जनता की आवाज फाउंडेशन
JANTA KI AWAAZ FOUNDATION

(CIN : U8532OMH2021NPL360285)
H.O.: 14/16, Popatwadi, 1st Floor, Office No. 8, Kalbadevi Road, Mumbai - 400 002, Bharat.
Tel.: 022-49617189, ✉ info@jantakiawaaz.org, 🌐 www.jantakiawaaz.org

जनता की आवाज फाउंडेशन

JANTA KI AWAAZ FOUNDATION

(CIN : U8532OMH2021NPL360285)

H.O.: 14/16, Popatwadi, 1st Floor, Office No. 8, Kalbadevi Road, Mumbai - 400 002, Bharat.
Tel.: 022-49617189, info@jantakiawaaz.org, www.jantakiawaaz.org

follow us on : janta.ki.awaaz

jantakiawaazfoundation

jantakiawaazfoundation

JantaKiAwaaz16